पाउडरी मिल्डयू रोग :	• रोगग्रस्त पौधों के अवशेषों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें। • फसल चक्र अपनाएं तथा खेत को खरपतवार से मुक्त रखें। • स्वस्थ फलों से ही बीज निकालें। • बीज का ट्राइकोडर्मा से उपचार करें। • भूमि से 15-20 सैं.मी. की ऊंचाई तक के पत्तों को तोड़ दें ताकि हवा का प्रभाव ठीक हो सकें। इस फफूंद के लक्षण पत्तों की निचली सतह पर चूर्णी धब्बों के रूप में दिखाई देते हैं, जिससे पत्तों की ऊपरी सतह पीली पड़ जाती है और पत्ते समय से पहले गिर जाते हैं। **रोकथाम :**
मुर्झान रोग (राल्सटोनिया सोलेनेसियरम) :	• पंचगव्य का 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें। • जल निकास का उचित प्रबंध करें। • ट्रिकोडर्मा हर्जियाम (10 ग्रा0/लीटर पानी) स्यूडोमोनास फ्लोरोसेन्स (10 ग्रा0/लीटर पानी) बेसिलस सबटिल्स (12 ग्रा0/लीटर पानी) का 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें। रोगग्रस्त पौधों के पत्ते बिना पीले पड़े ही नीचे की ओर झुक जाते हैं तथा बाद में पूरा पौधा मुरझा जाता है और मर जाता है। फलों पर सफेद रंग से घिरे छोटे भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। **रोकथाम :**
चित्तीदार मुर्झान रोग (टोमैटो स्पॉटिड विल्ट विषाणु) :	• रोगग्रस्त पौधों के अवशेषों को नष्ट करें। • फसल चक्र अपनाएं तथा रोगग्रस्त भूमि में कम से कम टमाटर की फसल तीन वर्ष तक न लगाएं। • रोग मुक्त बीजों का उपयोग करें तथा बीज को ट्राईकोडर्मा से उपचारित करें। • खेत तैयार करते समय ब्लीचिंग पाउडर (10 कि.ग्रा./हैक्टेयर) मिट्टी में मिलाएं तथा हल्की सिंचाई करें। • रोगग्रस्त खेतों में रोग प्रतिरोधक संकर किस्में जैसे कि सन सीड 7711 का ही रोपण करें। • रोगग्रस्त पौधों को निकाल कर नष्ट करें। इस रोग से ग्रस्त पौधों के पत्तों का रंग कांस्य की तरह हो जाता है। पत्ते मुड़ जाते हैं और पौधों की लंबाई भी कम हो जाती है। फलों की सतह पर लाल-पीले रंग के चक्र बनते हुए धब्बे भी दिखाई देते हैं। विषाणु की अपेक्षा टोमैटो स्पॉटिड विल्ट विषाणु की मार क्षमता बहुत अधिक है। शिमला मिर्च, लैट्यूस, मटर, तम्बाकू, आलू, टमाटर और बहुत सी सजावटी पौधों की प्रजातियां इस विषाणु की मुख्य परिपोषक फसलें हैं। **रोकथाम :** • पौध को जालीनुमा घर में उगाएं ताकि थ्रिप्स पौधशाला में प्रवेश न कर पाएं। • यदि फसल पर रोग के लक्षण दिखाई दें तो तत्काल प्रभावित पौधों को जड़ से निकाल कर नष्ट कर दें तथा फसल पर नीम के तेल का छिड़काव करें।

मोजेक (टोमैटो मोजेक विषाणु):	रोगग्रस्त पौधों के पत्तों पर हल्के व गहरे रंग की चित्तियां दिखाई देती हैं तथा छोटे पत्ते कभी-कभी विकृत हो जाते हैं। पत्तों का आकार भी कम हो जाता है। इस रोग को कोई भी रोगवाहक कीट संचारित नहीं करता। यह विषाणु रोगी बीज या भूमि में रोगग्रस्त पौधों के अवशेषों में कई माह तक जीवित रहता है। **रोकथाम :** • इस विषाणु को आसरा देने वाले खरपतवारों को नष्ट कर दें। • विषाणु मुक्त बीज के उपयोग से इस रोग की तीव्रता में काफी कमी आ जाती है। • फसल चक्र अपनाते रहें।
तुड़ाई एवं पैदावार :	टमाटर के फलों की तुड़ाई इस बात पर निर्भर करती है कि उन्हें कितनी दूर ले जाना है। सामान्यत: फलों को हरी परिपक्व जब फल के निचले भाग के एक चौथाई हिस्से में गुलाबी रंग आ जाए ऐसी अवस्था में तोड़कर दूर मंडियों में भेजा जा सकता है। सामान्य किस्मों की पैदावार 300-400 क्विंटल/हैक्टेयर तथा संकर किस्मों की 450-500 क्विंटल/हैक्टैयर है परन्तु औसतन पैदावार कई संकर प्रजातियों में अधिक भी हो सकती है।
भण्डारण :	टमाटर का भण्डारण 10-15^0 सै. तापमान और 80-85 प्रतिशत सापेक्षित आर्द्रता में 30 दिन तक किया जा सकता है जब फलों का तुड़ान हरे रंग से पीले रंग में परिवर्तित हो रहा हो। पके हुए टमाटर 5^0 सै. तापमान पर 10 दिन तक रखे जा सकते हैं।
बीज उत्पादन :	टमाटर स्वपरगित फसल होते हुए भी इसमें 2-5 प्रतिशत तक परागण आ सकते हैं। अत: बीज उत्पादन करते समय दो किस्मों के मध्य 50 से 100 मीटर की दूरी रखनी चाहिए। बीज प्राप्ति के लिये स्वस्थ पौधों का जिनमें एक जैसे आकार तथा रंग के फल लगते हो का चुनाव करना चाहिए। पूर्ण रूप से पक जाने पर ही बीज के लिए फलों का तुड़ान करना चाहिए। फलों से बीज मुख्यत: दो विधियों से निकाला जा सकता है- 1) **किण्वन विधि :** इस विधि में टमाटर के गुद्दे को किसी मिट्टी या प्लास्टिक के बर्तन में किण्वीकरण के लिए 3-+ दिनों तक रखते हैं। इसके बाद इसमें पानी डाला जाता है जिससे मुद्दा एवं छिलका तैरने लगता है तथा बीज नीचे बैठ जाते हैं। इसके बाद बीज को छाया में सुखाकर बंद लिफाफों में रख दिया जाता है। इस विधि में फल का कोई भी भाग खाने के काम नहीं आता है। 2) **अम्लोपचार विधि :** बड़े स्तर पर यदि बीज उत्पादन करना हो तो इस विधि का प्रयोग करें। फलों का गुद्दा इसमें खाने में लाया जाता है। 14 किलो पके हुए टमाटर के फलों में 100 मि.ली. व्यापारिक हाईड्रोक्लोरिक अम्ल गुद्दे के साथ अच्छी तरह मिलाकर 30 मिनट तक रख लें तथा इतने में ही बीज गुद्दा लसलसे पदार्थ से अलग हो जाता है। अम्लीय घोल में से बीजों को निथार कर साफ पानी में धोकर छाया में सुखायें। गोल किस्मों में 125-150 कि.ग्रा. तथा नाशपाती आकार वाली किस्मों में 75-100 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर बीज प्राप्त किया जा सकता है। संकर बीज उत्पादन के लिए हमेशा नर व मादा जातियों का संकरण करना पड़ता है।

टमाटर के सामान्य रोग